

भारतीय रुपए का अंतर्राष्ट्रीयकरण

प्रलम्बिस के लयि:

[भारतीय रज़िर्व बैंक](#), [रुपए का अंतर्राष्ट्रीयकरण](#), [वधिकि नविदिा](#), [वमिद्रीकरण](#), [वास्तवकि समय सकल नपिटान](#), [अंतर्राष्ट्रीय मुदरा कोष](#)

मेन्स के लयि:

रुपए के अंतर्राष्ट्रीयकरण के लाभ, रुपए के अंतर्राष्ट्रीयकरण की दशिा में कदम

चर्चा में क्यों?

भारतीय रज़िर्व बैंक द्वारा नयिकृत कार्य समूह ने रुपए को वशिष आहरण अधकिार (SDR) बास्केट में शामिल करने और रुपए के अंतर्राष्ट्रीयकरण की गति को तेज़ करने के लयि [वदिशी पोर्टफोलियि नविशक](#) (Foreign Portfolio Investor- FPI) प्रणाली के पुनः आकलन करने की सफिरशि की है ।

रुपए का अंतर्राष्ट्रीयकरण:

परचिय:

- रुपए का अंतर्राष्ट्रीयकरण एक ऐसी प्रक्रयिा है **जसिके अंतरगत सीमा पार लेन-देन में स्थानीय मुदरा के उपयोग को बढ़ावा देना शामिल है ।**
- इसमें आयात और नरियात व्यापार के लयि रुपए को बढ़ावा देना और **अन्य चालू खाता लेन-देन के साथ-साथ पूंजी खाता लेन-देन में इसके उपयोग को प्रोत्साहति करना शामिल है ।**

ऐतहिसकि संदरभ:

- 1950 के दशक में, भारतीय रुपए का **संयुक्त अरब अमीरात, कुवैत, बहरीन, ओमान और कतर** में कानूनी नविदिा के रूप में व्यापक उपयोग कयिा जाता था ।
- हालौकविर्ष 1966 तक भारत की मुदरा के अवमूल्यन के कारण इन देशों में भारतीय रुपए पर नरिभरता के लयि संप्रभु मुदराओं की शुरुआत हुई थी ।

रुपए के अंतर्राष्ट्रीयकरण के लाभ:

- **मुदरा मूल्य की सराहना करना:** इससे अंतर्राष्ट्रीय व्यापार में रुपए की मांग में सुधार होगा ।
 - इससे भारत के साथ काम करने वाले व्यवसायों एवं व्यापारयिों के लयि सुवधिा बढ़ सकती है तथा **लेन-देन लागत कम** हो सकती है ।
- **वनिमिय दर की असुथरिता में कमी:** जब कसिी मुदरा का अंतर्राष्ट्रीयकरण होता है तो उसकी वनिमिय दर सुथरि हो जाती है ।
 - **वैश्वकि बाज़ारों में मुदरा की बढ़ती मांग असुथरिता को कम करने में सहायता** कर सकती है जसिसे इसे **अंतर्राष्ट्रीय लेन-देन** के लयि **अधिक पूरवानुमानति और वशिषसनीय** बनाया जा सकता है ।
- **भू-राजनीतकि लाभ:** रुपए का अंतर्राष्ट्रीयकरण भारत के भू-राजनीतकि प्रभाव को बढ़ा सकता है ।
 - यह अन्य देशों के साथ **आर्थकि संबंधों को सुदृढ़** कर सकता है, द्वपिकषीय व्यापार समझौतों को सुवधिाजनक बना सकता है तथा **राजनयकि संबंधों को बढ़ावा** दे सकता है ।

चुनौतयिाँ:

- **सीमति अंतर्राष्ट्रीय मांग:**
 - वैश्वकि वदिशी मुदरा बाज़ार में रुपए की दैनकि **औसत हसिसेदारी केवल 1.6%** के आसपास है, जबकि **वैश्वकि माल व्यापार** में भारत की **हसिसेदारी लगभग 2%** है ।
- **परविरतनीयता संबंधी चुनौती:**
 - **भारतीय मुदरा (INR)** पूरी तरह से **परविरतनीय नहीं** है जसिका अर्थ है कि पूंजी लेन-देन जैसे कुछ उद्देश्यों के लयि इसकी परविरतनीयता पर प्रतबिंध है । यह **अंतर्राष्ट्रीय व्यापार एवं वतित में इसके व्यापक उपयोग को प्रतबिंधति** करता है ।
- **वमिद्रीकरण का असर:**
 - वर्ष 2016 में **वमिद्रीकरण**, हाल ही में 2,000 रुपए के नोट के प्रयोग पर प्रतबिंध **नेरुपए के प्रतविशिवास को प्रभावति कयिा है**, खासकर भूटान और नेपाल जैसे पड़ोसी देशों में ।
- **व्यापार नपिटान में चुनौतयिाँ:**

- हालाँकि लगभग 18 देशों के साथ रुपए में व्यापार करने का प्रयास किया गया है, लेकिन लेन-देन सीमिति ही रहा है।
- इसके अलावा रुपए में व्यापार नपिटाने के लिये रूस के साथ बातचीत धीमी रही है, मुद्रा मूल्यह्रास संबंधी चिंताओं और व्यापारियों के बीच अपर्याप्त जागरूकता के कारण इसमें बाधा आ रही है।
- अंतरराष्ट्रीयकरण की ओर कदम:
 - मार्च 2023 में RBI ने 18 देशों के साथ रुपए में व्यापार नपिटान के लिये तंत्र स्थापित किया।
 - इन देशों के बैंकों को भारतीय रुपए में भुगतान के नपिटान के लिये विशेष रुपया वॉस्ट्रो खाते (Special Rupee Vostro Accounts- SRVA) खोलने की अनुमति दी गई है।
 - जुलाई 2022 में RBI ने "भारतीय रुपए में अंतरराष्ट्रीय व्यापार नपिटान" पर एक परिपत्र जारी किया।
 - RBI ने रुपए में बाह्य वाणजियिक उधार (वशिषकर मसाला बॉण्ड) को सक्षम बनाया।

रुपए के अंतरराष्ट्रीयकरण को गति देने हेतु उपाय:

- पूर्ण परिवर्तनीयता और व्यापार समझौता: रुपए का लक्ष्य पूर्ण परिवर्तनीयता होना चाहिये, जिससे भारत और अन्य देशों के बीच वित्तीय नविश की मुक्त आवाजाही संभव हो सके।
 - भारतीय निर्यातकों और आयातकों को रुपए में चालान, लेन-देन के लिये प्रोत्साहित करने से व्यापार नपिटान औपचारिकता के अनुकूल होगा।
- तरल बॉण्ड बाज़ार: RBI को वदेशी नविशकों और व्यापार भागीदारों के लिये नविश विकल्प प्रदान करते हुए अधिक तरल रुपए बॉण्ड बाज़ार विकसित करने पर ध्यान केंद्रित करना चाहिये।
 - इसके अतिरिक्त रुपए के अंतरराष्ट्रीयकरण की गति को बढ़ाने के लिये वदेशी पोर्टफोलियो नविशक (FPI) व्यवस्था को फरि से व्यवस्थित करने की आवश्यकता है।
- RTGS प्रणाली का वसितार: अंतरराष्ट्रीय लेन-देन को नपिटाने के लिये रयिल-टाइम ग्रॉस सेटलमेंट (RTGS) प्रणाली का वसितार किया जाना चाहिये।
 - साथ ही भारत में रुपए का उपयोग करने वाले वदेशी व्यवसायों को कर प्रोत्साहन प्रदान करने से इसके उपयोग को बढ़ावा मलिया।
- मुद्रा स्वैप समझौते: जैसा कि श्रीलंका के साथ देखा गया है, मुद्रा स्वैप समझौते बढ़ने से रुपए में व्यापार और नविश लेन-देन की सुविधा प्राप्त होगी।
 - आत्मवशिवास बनाए रखने के लिये स्थिर वनिमिय दर व्यवस्था के साथ-साथ सुसंगत और पूर्वानुमानित मुद्रा जारी करने के साथ पुनर्प्राप्त आवश्यक है।
- SDR बास्केट में शामिल करना: रुपए को वशिष आहरण अधिकार (SDR) में शामिल करने के लिये प्रयास किया जाना चाहिये, जो प्रमुख मुद्राओं की बास्केट के आधार पर अंतरराष्ट्रीय मुद्रा कोष (IMF) द्वारा बनाई गई एक अंतरराष्ट्रीय आरक्षित संपत्ति है।
 - साथ ही भारतीय सरकारी बॉण्ड (IGBs) को वैश्विक सूचकांकों में शामिल किया जा सकता है, जिससे भारतीय ऋण बाज़ारों में वदेशी नविश आकर्षित होगा।
- चीन के अनुभव से सबक: रँमनिबी के अंतरराष्ट्रीयकरण के लिये चीन का दृष्टिकोण भारत के लिये मूल्यवान अंतरदृष्टि प्रदान करता है:
 - चरणबद्ध दृष्टिकोण: आरक्षित मुद्रा के रूप में इसके उपयोग की दशा में आगे बढ़ने से पहले चीन ने धीरे-धीरे चालू खाता लेन-देन और चुनदा नविश लेन-देन के लिये रँमनिबी के उपयोग को सक्षम किया।
 - अपतटीय बाज़ार: डमि सम बॉण्ड और अपतटीय RMBD बॉण्ड बाज़ार जैसे अपतटीय बाज़ारों की स्थापना ने अंतरराष्ट्रीयकरण प्रक्रिया को सुविधाजनक बनाया।

नोट:

- वदेशी पोर्टफोलियो नविश (Foreign Portfolio Investment- FPI): इसमें वदेशी नविशकों द्वारा नषिकरयि रूप से रखी गई प्रतभूतयिँ और अन्य वित्तीय संपत्तयिँ शामिल हैं।
 - यह कसिँ देश के पूँजी खाते का हसिसा है और इसे BOP पर प्रदर्शित किया जाता है।
 - यह नविशक को वित्तीय परसिंपत्तयिँ का प्रत्यक्ष स्वामित्व प्रदान नहीं करता है।
 - FPI FDI की तुलना में अधिक तरल, अस्थिर और जोखिमिभरा है।
 - इसे अक्सर "हॉट मनी" के रूप में जाना जाता है।
 - उदाहरण - सटाँक, बॉण्ड, मयुचुअल फंड, एक्सचेंज ट्रेडेड फंड।
- वशिष आहरण अधिकार:
 - SDR, IMF के खाते की इकाई के रूप में कार्य करता है, लेकिन यह न तो मुद्रा है और न ही IMF पर दावा है।
 - मुद्राओं की SDR समूह में अमेरिकी डॉलर, यूरो, जापानी येन, पाउंड स्टर्लिंग और चीनी रँमनिबी (वर्ष 2016 से) शामिल हैं।

नषिकरष:

राजकोषीय घाटे, मुद्रास्फीतदिर और बैंकगि गैर-नषिपादति परसिंपत्तयिँ को कम करने सहति तारापोर समतितिकी सफिरशिँ (1997 और 2006 में) को रुपए के अंतरराष्ट्रीयकरण की दशा में प्राथमकि कदम के रूप में अपनाया जाना चाहिये। साथ ही अंतरराष्ट्रीय संगठनों में रुपए को आधिकारिक मुद्रा बनाने के लिये प्रोत्साहित करने से इसका दायरा और स्वीकार्यता बढ़ेगी।

UPSC सविलि सेवा परीक्षा, वगित वर्ष के प्रश्न

प्रश्न. रुपए की परविरतनीयता से क्या तात्पर्य है? (2015)

- (a) रुपए के नोटों के बदले सोना प्राप्त करना
- (b) रुपए के मूल्य को बाज़ार की शक्तियों द्वारा नरिधारति होने देना
- (c) रुपए को अन्य मुद्राओं में और अन्य मुद्राओं को रुपए में परविरतति करने की स्वतंत्र रूप से अनुज्ञा प्रदान करना
- (d) भारत में मुद्राओं के लयि अंतर्राष्ट्रीय बाज़ार वकिसति करना

उत्तर: (c)

प्रश्न. भुगतान संतुलन के संदर्भ में नमिनलखिति में से कसिसे/कनिसे चालू खाता बनता है? (2014)

- 1. व्यापार संतुलन
- 2. वदिशी परसिपत्तथिँ
- 3. अदृश्यों का संतुलन
- 4. वशिष आहरण अधिकार

नीचे दयि गए कूट का प्रयोग कर सही उत्तर चुनयि:

- (a) केवल 1
- (b) केवल 2 और 3
- (c) केवल 1 और 3
- (d) केवल 1, 2 और 4

उत्तर: (c)

[?????: ? ??????](#)

PDF Refernece URL: <https://www.drishtias.com/hindi/printpdf/internationalisation-of-indian-rupee>

